वसेवोलॉड गार्शिन



मेंढकी यात्रा पर निकली

चित्र: वी. लिट्विनेंको, हिंदी: अरविन्द गुप्ता



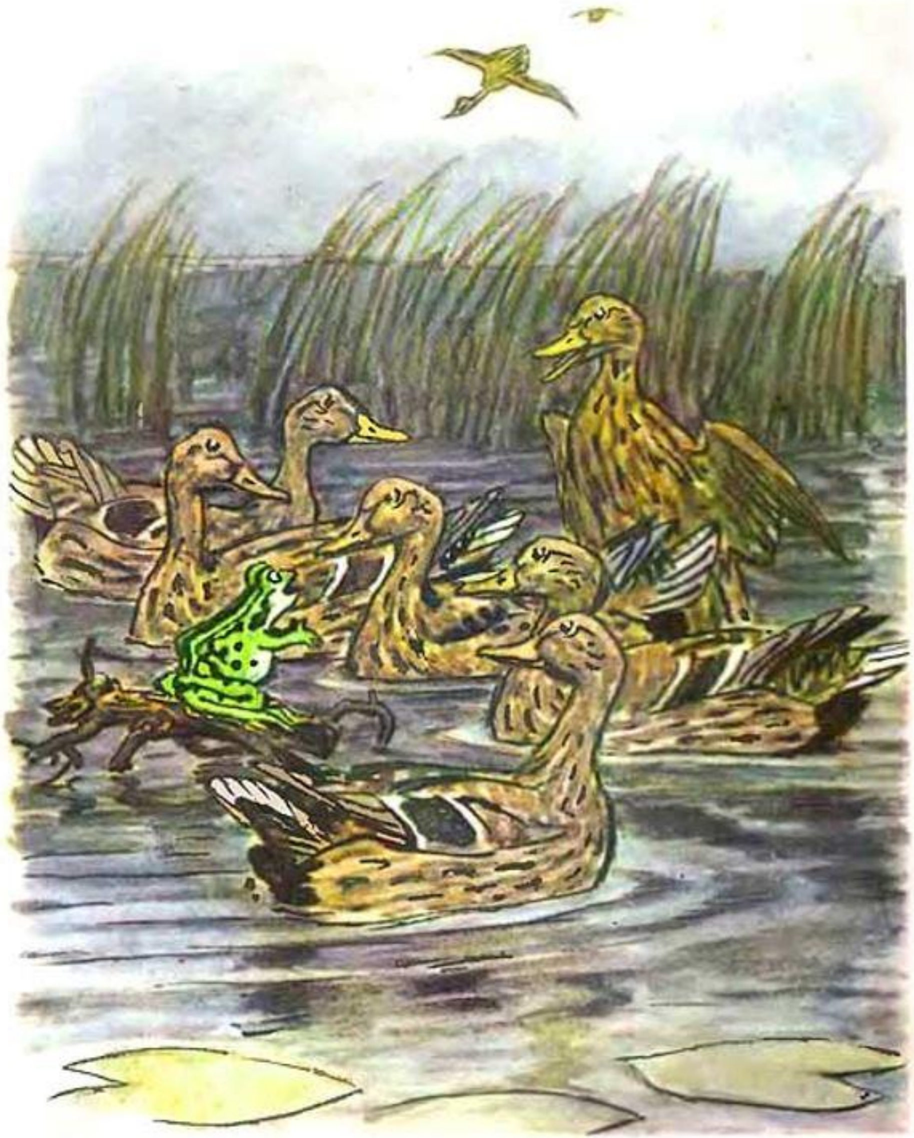
एक समय की बात है, एक मेंढकी थी. वह एक दलदल में रहती थी, और वो छोटे कीड़ों और मच्छरों को पकड़ती थी और वसंत ऋतु में अन्य सभी मेंढकों के साथ मिलकर जोर-जोर से टर्राती थी. वह अपने जीवन के अंत तक निश्चित रूप से वहाँ ख़ुशी से रहती - अगर किसी सारस ने उसे खाया नहीं होता. लेकिन एक दिन कुछ ऐसा हुआ जिसने मेंढकी के पूरे जीवन को अस्त-व्यस्त कर दिया.

वह पानी से बाहर निकले पत्थर पर बैठी गर्म बूंदाबांदी का आनंद ले रही थी.

"कितना प्यारा, गीला दिन है! जीवित रहना कितना अद्भुत है!" वह सोच रही थी.

बारिश उसकी धब्बेदार, चमकदार पीठ पर पड़ रही थी और बूँदें उसके पेट के नीचे और पैरों के पीछे से टपक रही थीं, और यह सब इतना सुखद था कि वह ख़ुशी से टर्राने लगी, लेकिन सौभाग्य से उसे समय पर याद आ गया कि वह शरद ऋतु थी और मेंढक ठंड के दिनों में टर्र-टर्र नहीं करते, वसंत टर्र-टर्र करने का मौसम होता है. इसलिए उसने अपनी कर्कश आवाज़ को थोड़ा धीमा किया, और चुपचाप आनंद लेती रही.

अचानक, उसने ऊपर से एक पतली, सीटी जैसी, टूटने वाली आवाज सुनी. जंगली बत्तखों की एक नस्ल है जिनके पंख हवा में उड़ते समय गाने की या यूं कहें कि सीटी की आवाज निकालते हैं. वे आमतौर पर इतनी ऊंची उड़ान भरते हैं कि आप उन्हें मुश्किल से ही देख सकते हैं, और केवल उनकी आवाज़ से ही झुंड के आगमन के बारे में पता चलता है. इस बार, बत्तखें नीचे आईं और हवा में एक विशाल अर्ध गोले में उड़ान भरने के बाद, उसी दलदल पर उतर गईं जहां मेंढकी का घर था.



"क्वैक-क्वैक," बत्तखों में से एक ने कहा. "हमें अभी लंबा रास्ता तय करना है, इसलिए बेहतर होगा कि हम यहीं कुछ खा लें."

यह सुनकर मेंढकी जल्दी से पानी में छिप गई. वह जानती थी कि बत्तखें उस जैसी एक बड़ी और मोटी मेंढकी को नहीं खाएँगी, लेकिन फिर भी पत्थर के नीचे मेंढकी के लिए छिपना सुरक्षित था.

लेकिन वह यह सुनना चाहती थी कि बत्तखें कहाँ जा रही हैं, इसलिए थोड़ा सोचने के बाद उसने अपना मुंह पानी से बाहर निकालने का साहस किया.

"क्वैक-क्वैक," एक दूसरी बत्तख ने कहा. "मौसम ठंडा हो रहा है. हमें दक्षिण की ओर शीघ्रता से जाना चाहिए, हमें दक्षिण की ओर जाने की जल्दी करनी चाहिए!"

फिर बाकी सभी बत्तखें ज़ोर-ज़ोर से उसके अनुमोदन में क्वैक-क्वैक करने लगीं.

"मुझे अंदर छिपने के लिए माफ करें," मेंढकी ने डरते हुए कहा, "लेकिन वह दक्षिण में कौन सी जगह है जहाँ तुम जाने की जल्दी कर रही हो?"

बत्तखें, मेंढकी के चारों ओर घूमने लगीं. उनका पहला विचार उसे खाने का हुआ, लेकिन फिर प्रत्येक बत्तख ने फैसला किया कि वह बहुत बड़ी थी और वो उनके गले में चिपक जाएगी. और फिर वे सभी बत्तखें अपने पंख फड़फड़ाते हुए एक साथ चिल्लाने लगीं:

"दक्षिण में अभी सुंदर है! वहां अभी गर्मी है. वहाँ कितने अच्छे, गर्म दलदल हैं! वहां मोटे-मोटे कीड़े हैं! देखो दक्षिण इस समय बहुत सुंदर है!"



उनकी उत्तेजित चीख ने मेंढकी को लगभग बहरा कर दिया. आख़िरकार उसने उन्हें चुप रहने के लिए कहा, और उस बत्तख से विनती की, जो दूसरों की तुलना में अधिक समझदार थी, वह उसे बताए कि में दक्षिण क्या था.

और जब बत्तख ने उसे बताया, तो मेंढकी ने सोचा कि दक्षिण वास्तव में अद्भुत होगा, लेकिन वह एक सतर्क आत्मा थी, और इसलिए उसने यह सुनिश्चित करने के लिए कहा:

"क्या वहाँ मक्खियाँ और मच्छर होंगे?"

"ओह, वहां उनके घने बादल हैं!" बत्तख ने उत्तर दिया.

मेंढकी ने टर्र-टर्र की आवाज़ दी, और तेजी से यह देखने के लिए घूमी कि क्या उसके किसी दोस्त ने शरद ऋतु में उसे टर्र-टर्र करते हुए सुना था. लेकिन वह केवल एक बार ही सही, टर्र-टर्र करने से खुद को नहीं रोक सकी. "मुझे अपने साथ ले चलो," मेंढकी ने बत्तखों से कहा.

"विचार तो बड़ा अच्छा है!" आश्चर्यचकित बत्तखों ने उत्तर दिया. “लेकिन हम तुम्हें कैसे साथ ले जा सकते हैं? तुम्हारे पास पंख नहीं हैं."

"आप कब अपनी यात्रा शुरू कर रहे हैं?" मेंढकी ने पूछा.

“जल्द ही, बहुत जल्द,” सभी बत्तखें एक साथ चिल्लाईं. “क्वैक, क्वैक, क्वैक, क्वैक! यहां ठंड है. हमें जल्दी से दक्षिण, दक्षिण, दक्षिण की ओर जाना चाहिए!”

"ठीक है, मुझे पाँच मिनट दीजिए,?" मेंढक से विनती की. "मैं वापस आऊंगी, मैं निश्चित रूप से कुछ सोच-विचार करके वापिस आऊंगी."



वह उस पत्थर से पानी में कूद गई जिस पर वह फिर से चढ़ी थी. उसने कीचड़ में गोता लगाया और खुद को पूरी तरह से उसमें दबा दिया ताकि उसकी सोच में कोई बाधा न आए. पांच मिनट बीत गए, बत्तखों ने उड़ान भरने का फैसला किया, और ठीक उसी क्षण मेंढकी पानी से बाहर निकलकर पत्थर के पास आई, और उसका चेहरा उतनी ही चमक से चमक उठा जितना किसी मेंढक का चेहरा चमक सकता था.

"मैंने कुछ सोचा है! मुझे एक रास्ता मिल गया है," वह चिल्लाई. "तुम दोनों अपने बिलों में एक टहनी पकड़ लो, और मैं उस पर बीच में लटक जाऊँगी. फिर तुम उड़ोगे और मुझे अपने साथ ले चलोगे. एकमात्र बात यह है कि तुम्हें कुछ बोलना नहीं चाहिए और मुझे भी बोलना नहीं चाहिए, फिर सब कुछ ठीक रहेगा."

हालाँकि एक हल्के मेंढक को हजारों मील तक ले जाना और रास्ते में कुछ नहीं बोलना ज्यादा मजेदार नहीं था, लेकिन बत्तखें मेंढकी की चतुराई से इतनी खुश हुईं कि वे सभी उसे ले जाने के लिए सहमत हो गईं. हर दो घंटे में बत्तखें बदल जाती थीं, और चूंकि इतनी सारी बत्तखें थीं और केवल एक ही मेंढकी थी, इसलिए बत्तखों की बारी भी बार-बार नहीं आती थी. उन्हें एक अच्छी, मजबूत टहनी मिली, बत्तखों में से दो ने उसके सिरों को अपनी चोंच में पकड़ लिया, जबकि मेंढकी बीच में अपने मुँह से लटकी रही, और पूरे झुंड ने उड़ान भरी.

मेंढकी की सांस उस भयानक ऊँचाई पर रुकी जहाँ तक बत्तखों ने उसे उठाया; इसके अलावा, वे ठीक से लाइन में नहीं रहते थे और टहनी को झटका देते थे. उससे बेचारी मेंढकी कागज के जोकर की तरह हवा में झूल जाती थी, अपनी पकड़ ढीली होने और बहुत नीचे जमीन पर गिरने के डर से वो अपने जबड़ों को पूरी ताकत से भींच लेती थी. फिर भी, वह जल्द ही इस अजीब स्थिति की अभ्यस्त हो गई और अपने चारों ओर नज़र डालने लगी. टहनी से लटकते हुए वह खेतों, घास के मैदानों, नदियों और पहाड़ियों को बहुत अच्छी तरह से नहीं देख पाती थी जो बहुत तेज़ी से अतीत में टिमटिमाते थे, लेकिन फिर भी वह ऊपर देख सकती थी और अपने पीछे भी थोड़ा सा देख सकती थी, इसलिए वह काफी खुश थी.

"क्या मैं यह सोचने में चतुर नहीं हूँ!" उसने खुद से कहा.

इसी बीच सामने वाले बत्तखों का जोड़ा जो उसे ले जा रहा था, के पीछे उड़ रही बत्तखों ने जोर-जोर से चिल्लाकर मेंढकी की प्रशंसा की.

"क्या हमारा मेंढकी दिमागदार नहीं है," उन्होंने कहा. "बत्तखों में भी इतने दिमागदार पक्षी नहीं होते हैं!"

मेंढकी उन्हें धन्यवाद देना चाहती थी, लेकिन समय पर याद आया कि अगर उसने अपना मुंह खोला तो वह उस भयानक ऊंचाई से गिर जाएगी, फिर उसने अपने जबड़े और भी जोर से भींच लिए और चुप रही. वह सारा दिन ऐसे ही झूलती रही; बत्तखों ने उड़ान में बदलाव किया, चतुराई से टहनी को अगले जोड़े को दे दिया, लेकिन यह बहुत डरावना था, और मेंढकी डर से लगभग टेढ़ी हो गई, लेकिन उसे बहादुर बनना पड़ा और वह वाकई में बहादुर थी. शाम को, झुंड एक अजीब दलदल में रात के लिए रुक गया. भोर में, वे फिर से चले गए, लेकिन इस बार मेंढकी का मुंह सामने था, और पहले की तरह पीछे नहीं, नीचे क्या था वो बेहतर देख सकती थी. बत्तखें, कटे हुए खेतों, पीले जंगलों और गांवों के ऊपर से उड़ गईं, जहां फसलें के ढेर लगे थे. वे लोगों को बातें करते हुए और उनकी आवाज़ सुन सकते थीं जब वे अनाज कूटते थे. लोगों ने झुंड को देखने के लिए अपनी गर्दनें टेढ़ी कीं और उसमें कुछ ने कुछ अजीब देखकर अपने हाथों से इशारा भी किया. मेंढकी बुरी तरह जमीन के ऊपर कूदना चाहती थी, ताकि लोग उसके बारे में क्या कह रहे थे वो उसे सुन सके और देख सके. अगले पड़ाव पर उसने बत्तखों से कहा:

“क्या हम थोड़ा नीचे नहीं उड़ सकते? ऊंचाई से मुझे चक्कर आता है और मुझे डर है कि अगर अचानक मेरी तबीयत खराब हो गई तो मैं गिर जाऊंगी.''

दयालु बत्तखों ने इतनी ऊँची उड़ान न भरने का वादा किया. और अगले दिन वे इतनी नीचे उड़े कि उन्हें पता चल गया कि ज़मीन पर लोग क्या कह रहे थे.

"देखो, देखो," एक गाँव के बच्चे चिल्लाये. "देखो, बत्तखें एक मेंढक को ले जा रही हैं!"

मेंढकी ने उन्हें सुना, और उसका दिल उछल पड़ा.

"देखो, देखो," अगले गाँव में वयस्क चिल्लाये. "आपने ऐसा कभी नहीं देखा होगा!"

“क्या उन लोगों को यह पता था कि यह उसका विचार था, बत्तखों का नहीं,” मेंढकी ने सोचा.

"देखो, देखो," बच्चे उस तीसरे गाँव में चिल्लाए जहाँ वे उड़े. पृथ्वी पर कौन इतनी चतुर बात के बारे में सोच सकता है!"

मेंढकी के लिए यह बहुत ज़्यादा था और वह सावधानी भूलकर तेज़ आवाज़ में चिल्लाई:

"मैंने ही वो सोचा था! वह मेरा ही विचार था, मेरा!”



और, इस चीख के साथ वह जमीन पर गिर पड़ी. बत्तखें घबराकर रोने लगीं; उनमें से एक ने उड़ते हुए मेंढकी को पकड़ने की कोशिश की लेकिन वो चूक गई. मेंढकी अपने चारों पंजे झटकते हुए तेजी से गिरी, लेकिन चूंकि बत्तखें भी बहुत तेजी से उड़ रही थीं, इसलिए मेंढकी उस सख्त सड़क पर नहीं गिरी, जिसके ऊपर वह चिल्लाने लगी थी, बल्कि आगे, गांव के किनारे पर गिर गई. सौभाग्य से एक बड़े, गंदे तालाब में जाकर गिरी.

वह तुरंत पानी से बाहर निकली, और अपनी ऊँची आवाज़ में उत्साह से चिल्लाई:

"देखो, वह मेरा विचार था, मेरा!"

लेकिन उसकी सुनने वाला वहाँ कोई नहीं था. स्थानीय मेंढक अचानक उस छपाक से भयभीत होकर पानी में छिप गये थे. अब वे एक-एक करके पानी से बाहर आने लगे और सभी उस अजनबी को निराशा से देखने लगे.

मेंढकी ने उन्हें बताया कि कैसे वह पूरी जिंदगी सोचती रही और आखिरकार उसने यात्रा का एक नया, असाधारण तरीका ईजाद किया. उसने मेंढ़कों को बताया, उसके पास अपनी बत्तखें थीं, जो उसे वहां ले जाती थीं जहां वह जाना चाहती थी. वह दक्षिण की ओर गई थी, जहां का मौसम बहुत अच्छा था, जहां दलदल बहुत सुंदर और गर्म थे, और जहां सभी प्रकार के स्वादिष्ट कीड़ों के बादल थे.

"मैं बस यह देखने के लिए आई थी कि आप सब कैसे हैं," उसने कहा. “मैं वसंत तक तुम्हारे साथ रहूंगी जब तक कि मेरी बत्तखें मेरे लिए वापस नहीं आ जातीं. मैंने उन्हें जाने दिया, जो आप सबने देखा होगा.”

लेकिन बत्तखें कभी वापस नहीं आईं. उन्होंने सोचा कि मेंढकी कठिन सड़क पर दुर्घटनाग्रस्त हो गई होगी, और उन्हें उसके लिए बहुत खेद हुआ.